

Written by कुमार सौवीर

Tuesday, 19 June 2018 10:22

: 00000000000 000000 00000000000 00 00 000000, 00 00000000 00 00000000000000
00000 00 : 00000 0000 00 00000000 0000 0000000 00, 00 00000 0000 00 0000 00 00000 00000
00 : 0000000 00 0000 00 00 0000000 00, 00 0000 0000 00000000 00 0000000 00000 0000 :
00000 00000000 00000000000 0000000000 **13** 0000000000 00 00000000000 00000, 00000 00
000000 :
000000 000000



000000 000000

00000 : ओम् त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धमि पुष्टविरधनम् उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योरमुक्षीय मामृतात् !!

यह है मृत्युंजय मंत्र अकाल-मृत्यु से प्राण-रक्षा के लिए इस मंत्र के जाप का प्रावधान है, कुछ ऐसी ही कहानियां सुनाते हैं हमारे समाज के वे लोग, जो तथाकथित तौर पर अपने का ज्ञानी और पंडित बनने का दावा करते हैं जजमान को यह बताया जाता है कि उसकी आयु अब खत्म होने के है अकाल मृत्यु हो सकती है तुम्हारी कोई भयावह दुर्घटना हो सकती है, कोई सांप-सपेरा सूँघ कर तुम्हारा तथियां-पांचा कर सकता है कोई मुठकनी कर सकता है, तुम्हारा काम लग सकता है

नदिन, चलो बेटा सतरकहो जाओ मैं तुम्हारी पीड़ा समझ चुका मरज की नस पकड़ में आ गयी है, तो उसे गर्दनियां देकर उसका टेंटुआ दबोच दूंगा मृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप करना होगा इसमें कुछ हफ्ते लग सकते हैं, कई लोग जुटाये जाँगे, और उसके बाद तुम बलिकुल चकचकहो जाओगे बस, अपनी जेब-टेंट खाली करो मकसद होता है अनष्टि के आशंकाओं से गुरसति और भयभीत लोगों का "कम" लगा कर उनका भयादोहन किया जा दो-टुक बोले तो:- दो जून की रोटी

खैर, यहां मेरा आशय पंडित-ज्ञानी बन कर लोगों के डरा कर रकम झटकना नहीं है बल्कि मैं तो इसके माध्यम से केवल दो बातें स्पष्ट करना चाहता हूँ पहली तो यह कि मेरे हिसाब से मंत्र का जाप मन के त्राण यानी शांति प्राप्ति करने के लिए होता है और यह तब ही हो सकता है, जब हम मंत्र के रटने के बजाय उसे ठीक से समझने की सतत केशशि करते रहें मंत्र के भाव का दर्शन करने के माध्यम से ही मंत्र और मंत्रोच्चारण करने वाले का त्राण यानी शांति मुमकिन है आप उसे योग भी कह सकते हैं, या फिर आध्यात्म म भी जिसमें प्रदर्शनी लगा कर चलि ल-पों करना नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकना कमात्र माध्यम, दर्शन और लक्ष्य होता है

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 19 June 2018 10:22

तो इसकेलाँ पहले यह समझ लिया जाँ कि यह मृत्युं युंजय मंत्र आखरि है क् या सचाई तो यह है कि यह मंत्र किसी की भी प्राण-रक्षा नहीं करता। वह किसी के मौत से बचाने का गंदा-धंधा नहीं करता। जन्म और मृत्यु तो प्रकृतिक अकट्य और अनविर्य स् वाभाविक चरित्र है जो जन्मा है, वह मरेगा ही। ताली मार-मार कर मच छर तो खूब मारते हो, लेकिन अपनी मौत के सोच कर हृदय की त्वचा फटने लगती है। अरे, बचपन के बूढा ही होगा। तो कोई भी मंत्र आपके मौत से बचाने की औकत नहीं रखता, बल्कि वह तो साक्षात् मृत्यु से साक्षात् कर कराता है। वह मृत्यु, जो आपके भवषि के हर अगले क्दम पर आपके लक्ष्य और उद्देश्य हम उस त्रिनेत्रधारी भगवान शवि की आराधना करते है जो अपनी शक्ति से इस संसार का पालन-पोषण करते है, उनसे हम प्रार्थना करते है कि वे हमें इस जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर दे और हमें मोक्ष प्रदान करें। जिस प्रकार से क कर्णी अपनी बेल से पक जाने के पश्चात् स्वत की आँद होकर जमीन पर गरि जाती है, उसी प्रकार हमें भी इस बेल रुपी सांसारिक जीवन से जन्म-मृत्यु के सभी बन्धनों से मुक्ति प्रदान कर मोक्ष प्रदान करें।

तो दोस् तो, दूसरी बात यह कि मैं अब इस महा मृत्युं युंजय मंत्र को जपने के बजाय उसे हमेशा हृदयंगम करने की प्रकृति में रहता हूँ। उसके संदेश, उसके दर्शन और उसकी व याख या के समझने की केशशि के तहत अपने जीवन और उसके दायित्वों पर काम कर रहा हूँ। इसमें सबसे पहली केशशि तो अपने दायित्वों के सकुशल निपटाना है। और उसमें भी सबसे नजि और पारिवारिक दायित्वों को पूरा करना है। तो अब मेरी इच्छा पारिवारिक दायित्वों व बचा है मेरी बेटी। इसी 13 अक् टूबर को उसका विवाह तय हुआ है।

और उसके बाद मेरे पारिवारिक दायित्वों व न्यूनतम होते जाँगे, जबकि सामाजिक दायित्वों व उत्तरोत्तर बढ़ते जाँगे। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि सार्वजनिक सामाजिक दायित्वों के चलते आसाराम बापू, स् वामी चनि मयानन्द या रामरहीम की लीकडगर लपक लूंगा। हा हा हा।

खैर, 13 अक् टूबर के बाद से मेरी यह जीवन-कहानी अपनी बेल से पूरी तरह टूट जाँगी। बीज बखिर जाँगे, लेकिन किसी न किसी के मनोमस्तिष्क में उसके अंकुश हो जाँगा, अवश्य। और इस तरह मेरा वैचारिक पुनर्जन्म होता रहेगा। जैसे लाखों-करोड़ों जैसे आदमिल से होता रहा है, और जैसे भवषि के अनन्त काल तक होता रहेगा। कोई बात नहीं कि मेरे पास रानियां नहीं है, लेकिन इस सत्य के कोई कैसे झुठला सकता है कि मैं ही आदि था और मैं ही अनन्त रहूँगा। अहम् ब्रह्मास्माँ।

ओम शांति: ओम शांति: ओम शांति: